ISSN : 2393 - 9362

साहित्य सरस्वती

जुलाई - सितम्बर 2020
वर्ष -सात अंक 27

श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय,सागर (म.प्र.)

सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रष्ट सागर के पदाधिकारी गण

बैठे से (बाएँ से दाएँ) – श्री जी.एल. छन्नसाल (सह सचिव), डॉ.श्रीमती मीना पिम्पलापुरे ,
श्री लक्ष्मीनारायण यादव,पूर्व सांसद (लोकसभा) एवं न्यासी, श्री के.के. सिलाकारी,एडवोकेट (अध्यक्ष)
पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी (सचिव), डॉ. सुरेश आचार्य(न्यासी)
पीछे खड़े हुए (बाएँ से दाएँ) – श्री प्रभाकर राव भागवत,श्री जवाहरलाल चौरसिया, श्री जगदीश माहेश्वरी,
श्री रामचन्द्र केशरवानी (न्यासी),श्री डी.एन. चौबे (कार्यालय प्रभारी),श्री राजू चौबे एवं श्री गुड्डा सैनी

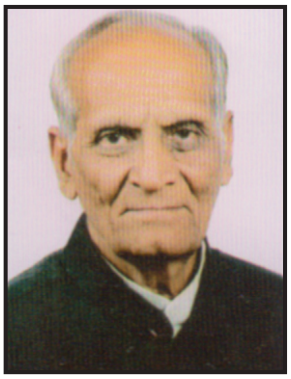

अध्यक्ष
के.के. सिलाकारी (एड.)

**समस्त पाठकों को
साहित्य सरस्वती पत्रिका
परिवार की ओर से
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी,रक्षाबंधन
तथा स्वतंत्रता दिवस की
हार्दिक शुभकामनाएँ ।**

सचिव
पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी

साहित्य सरस्वती

हिन्दी त्रैमासिक

वर्ष - सात, अंक - सत्ताइस, जुलाई-सितम्बर 2020

संपादक

डॉ. सुरेश आचार्य

उप-संपादक

सरदार पृथ्वीपाल सिंह

डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय

व्यवस्था एवं परामर्श

- के. के. सिलाकारी, एडवोकेट, अध्यक्ष
- पूर्व सांसद लक्ष्मीनारायण यादव, न्यासी
- डॉ. मीना पिम्पलापुरे, न्यासी
- पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी, सचिव

ISSN - 2393-9362
विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा अनुमोदित जर्नल नं. 47704

संपर्क - सचिव, श्री सरस्वती पुस्तकालय एवं वाचनालय ट्रस्ट,
गौर मूर्ति, सागर (म.प्र.)
फोन : 07582-243759, मो. : 9406519191

- **लेखकों के विचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।**
- **समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र सागर (म.प्र.) होगा।**
- **सभी पद पूर्णतः निःशुल्क और अवैतनिक हैं।**
- **रचनाओं के लिए किसी भी प्रकार के भुगतान की व्यवस्था नहीं है।**

रचनाकारों से निवेदन

- **कृपया इस त्रैमासिक पत्रिका के लिए अपनी रचनाएँ प्रेषित करें।**
- **रचनाएँ छोटी हों। लेख एवं कहानियाँ 7-8 पृष्ठों से अधिक न हों।**
- **रचनाएँ सुस्पष्ट हों, टंकित हों।**
- **पुस्तक-समीक्षा स्वयं करवा कर प्रेषित करें।**
- **रचनाएँ इस पते पर प्रेषित करें–**
  डॉ. सुरेश आचार्य
  37, अन्नपूर्णा विद्यापुरम, मकरोनिया,
  सागर (म.प्र.) पिन कोड - 470004
  मो. : 09826221961
  Email: shreesuryam@gmail.com

आवरण
असरार अहमद, सागर
Mob. 9926438999
asrarart@9gmail.com

अक्षर संयोजन एवं मुद्रण
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, वेस्ट गोरख पार्क, गली नं. 1E
शाहदरा, दिल्ली-110032

सम्पादकीय

तीसरे विश्वयुद्ध की कगार पर

कहते हैं, हर युद्ध के पीछे जोरू, जर और जमीन ही होती हैं। दक्षिण चीन सागर के कारण उससे लगभग ग्यारह हजार किलोमीटर दूर से अमेरिका जैसे व्यापार-लोलुप देश की रुचि के पीछे अगर कोई कारण है तो वह है दक्षिण चीन सागर की अकूत धन-सम्पदा यह प्राकृतिक गैस और तेलों के विशाल भंडारों वाला सागर है। सी-फूड के चीनी-अमेरिकी स्वाद-लोलुप भी इसके पीछे हैं।

दरअसल लगभग तीस लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला चीन सागर सारे संसार की नजरों में है। चीन तो 1945 से ही इस पर अपना दावा ठोकता रहा है। मगर चीन की तो हर संसाधन, हर जमीन और हर आसमान पर दावा ठोकने की आदत पड़ गई है। झूठे और नीच केवल मनुष्य ही नहीं होते। देश भी होते हैं। उनका समय-समय पर इलाज होना भी जरूरी है। मनुष्यों का इलाज तो खैर मनुष्य ही कर देते हैं। जब कई देशों को इलाज करने की आवश्यकता होती है। तब विश्वयुद्धों का संकट खड़ा होता है। संसार अभी तक दो विश्वयुद्धों से निपट चुका है। पहला विश्वयुद्ध तो खैर सीमित संसाधनों से लड़ा गया था। मगर दूसरी आलमी जंग में तो शायरों ने जिस्म तो छोड़िए परछाइयों तक के जल जाने का जिक्र किया है। यह उस अणुबम की करतूत थी जो अमेरिका ने अगस्त 1945 में जापान के हिरोशिमा और नागासाकी शहरों पर दे पटका था। यह इतना भयावह था कि सड़कों पर चलते लोग गायब हो गए मगर उनकी परछाइयाँ निगेटिव की तरह सड़कों पर बनी रह गईं। बड़े सामाजिक स्थानों में, सिनेमाघरों में, स्कूलों और कॉलेजों में बैठे लोग पिघलकर बह गए। बड़े-बड़े गगनचुम्बी प्रासाद ज्यों-के-त्यों खड़े रहे मगर जब हवा चली तो वे राख की तरह उड़ गए। युद्ध रुक गया। अब तीसरा विश्वयुद्ध दुनिया का दरवाजा खटखटा रहा है। वजह है चीन-समुद्र।

हमारे शहर सागर के शायर हैं अशोक मिज़ाज साहब। उनका एक शेर पेशे ख़िदमत है–

मगरमच्छों ने जाने कितनी सारी मछलियाँ खा लीं,
समन्दर पहले भी चुप था, समन्दर आज भी चुप है।

पूरा संसार भी एक महासागर ही है। भारतीय धर्म दर्शन इसे भवसागर, संसार-सागर भी कहता है। ज़ाहिर है सारी बड़ी मछलियाँ और मगरमच्छ छोटी मछलियों की दावत फटकारते हैं। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम सारे संसार में यही चल रहा है। भ्रष्टाचार क्या है? बड़े मगरमच्छों द्वारा मछलियाँ खाना ही है। गरीब-गुरबों, छोटे लोगों, कचहरियों में खड़े लोगों के दिल से पूछिए कि क्या हाल है।

जो हाल ट्रेलर में मनुष्यों का है। वही फिल्म में देशों का है। शिवकुमार श्रीवास्तव कहते थे कि बारुद के ढेर पर बैठकर इत्मीनान से बीड़ी पी रही है दुनिया। रोज नये-नये अणु अस्त्र, रोज नये-नये शस्त्र, रोज विध्वंस के नये तरीके खोजते देश एक-दूसरे के संसाधनों पर नजर गड़ाए हैं। झूठ और अनेकार्थी बयानों से घिरे हुए देश, संसार का एकछत्र नेता बनने की लालसा पाले देश तीसरी दुनिया के दीन-दरिद्रों की चिन्ता से बेपरवाह देश आखिर क्या प्राप्त करेंगे। युद्धों के बाद लाशों के ढेर पर बैठकर अन्ततः शान्ति के गीत गाने का पाखंड करेंगे। शायद इसीलिए साहिर लुधियानवी ने कहा था– ये दुनिया अगर मिल भी जाए तो क्या है? एक अशान्त, गैरबराबर, भूखे और बीमार संसार के अधिनायक बनकर अमेरिका या चीन कौन-सा राजमुकुट धारणकर अपने घाव सहलाएँगे। अभी समय है दो दलों में विभाजित होते विश्व को रोका जाए।

मुझे आश्चर्य है कि चीन पर महात्मा गौतम बुद्ध का प्रभाव कहाँ चला गया? कन्फ्यूशस के सैद्धान्तिक विवेचन का क्या हुआ? पूरे संसार को लाल करने का खूनी विचार चीन के सत्ताधीशों के मन में कहाँ से आया। गौतम, गाँधी और महावीर स्वामी क्या केवल जयन्तियाँ मनाने के लिए शेष रह गए हैं। बढ़ती हुई वैचारिक दरिद्रता आखिर संसार को कहाँ ले जाएगी। क्या पूर्ण विनाश ही प्रगति का चरम सोपान है।

अपने स्कूल के दिनों में सुना करते थे कि यदि तीसरा विश्व युद्ध हुआ तो वह इतना भीषण और भयानक होगा कि फिर चौथा विश्व युद्ध केवल लाठी-डंडों से लड़ा जाएगा और यह कि तीसरा विश्वयुद्ध पानी की वजह से होगा। चीन-सागर तो अपार जलराशि और अथाह सम्पदा कोष है तो क्या हम सचमुच विश्वयुद्ध की कगार पर खड़े हैं।

विज्ञान ने बड़ी तरक्की की है। इसमें कोई शक नहीं किन्तु क्या मनुष्यता ने भी वैसी ही तरक्की की है। वायरस बम बनानेवालों की मानवीयता कितनी और कैसी होगी। यह विचार का विषय है। एक पुरानी कहावत है कि साँड़ों की लड़ाई में मेंढक मरते हैं। आशय यह कि जलाशयों में साँड़ लड़ते थे तो मेंढक उनकी टक्करों में मर जाते थे। साँड़ मूलतः कृषि-उपयोगों के लिए होते थे। ट्रैक्टर से खेतों की जुताई ने उन्हें बेरोजगार कर दिया। अब विज्ञान के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित महादेशों के वायरस और एटम बमों से, मिसाइलों और ड्रोन्स पर लदे बमों की वर्षा से दुनिया में कब कहाँ कौन मासूम निरपराध और निर्दोष जन-समूह मुरदों में बदल जाए इसका कोई ठिकाना नहीं। लाखों लोग यत्र-तत्र कोरोना वायरस से मारे गए हैं। महामारियों का हथियारों की तरह उपयोग करने की शैतानी सूझ पर लानत है।

आणविक आक्रमणों में जमीन नीचे किलोमीटरों तक जल जाती है। वर्षों तक बंजर बनी रहती है। कीट-पतंग, पक्षी, पखेरू, जानवरों और इंसानों की इतनी भयानक मृत्यु होती है कि लोग लानतें भेजते हैं। मनुष्यों और अन्य कई प्राणियों की कई पीढ़ियाँ नष्ट हो जाती हैं या पीढ़ियों तक अपंग और अपाहिज सन्तानें पैदा होती हैं। मेरी समझ में यह विस्तारवाद या साम्राज्यवाद कभी नहीं आया। बल्कि मुझे यह मूर्खता ही लगती है कि घर में दस हजार बोरे गल्ला रखा हो और डॉक्टर की राय पर आप उबली लौकी खाते फिरें। अधिक संचय भोग का नाश करता है और भोग संचय कम करता है। इस विस्तारवादी और साम्राज्यवादी सोच के पीछे यही अवधारणा है। अन्ततः सारे महादेश अपने अन्तर्विरोधों से टूटकर बिखरते देखे गए हैं। इतिहास गवाह है कि हर साम्राज्यवादी और विस्तारवादी शक्ति का यह सुनिश्चित भविष्य है।

पास-पड़ोस के रहनेवालों में राग-द्वेष, ईर्ष्या और झगड़ा तो जब से दुनिया बनी है तब से चल रहा है। समय के साथ मनुष्य के नख-दंत झड़ गए। उसकी पशुता नहीं झड़ी। इस पाशविक सोच ने ही भयानकतम शस्त्रास्त्र बनाए। फिर सन्तुलन के लिए अन्य राष्ट्रों ने बनाए। इस दौड़ में वे भूखे-नंगे राष्ट्र भी शामिल हो गए जिनकी मूल समस्या अन्न-वस्त्र है। उधारी पर चल रहे हैं मगर मूँछे मरोड़ना नहीं छोड़ते। हालाँकि बेचारे क्लीनशेव रहते हैं तो क्या मरोड़ेंगे। छोड़िए।

चलिए ईश्वर से, अल्ला-मियाँ से, जीजस क्राइस्ट से और वाहे गुरु से घुटना टेक कर यह प्रार्थना करें कि वही इन महामानवों की बुद्धि नियन्त्रित करें। इन्हें सद्बुद्धि प्रदान करें। इन वीरों को समझाना मनुष्य के वश की बात नहीं है। यह पृथ्वी हरी-भरी रहे। सभी सुखी हों। सभी निरोग रहें सब अच्छे दिन देखें किसी को कोई दुख न हो इस प्रार्थना के साथ–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चित् दुख भाग्भवेत्।।

–सुरेश आचार्य

हस्तक्षेप

घनआनन्द जीवन दायक हौ

बादलों का एक नाम पर्जन्य भी है। पर्जन्य यानी जो दूसरों के लिए जन्म लेते हैं। भू-लोक के कल्याण के लिए देह धारण करते हैं और बरसकर सबको सन्तुष्ट कर, पृथ्वी को नये जीवन-चक्र का आरम्भ करने का सौभाग्य प्रदान कर स्वयं मिट जाते हैं। ऐसे उदार, दानी, परोपकारी बादलों के पास दान के उचित प्रबन्धन का विवेक भी है क्या? दान सुपात्र को ही दिया जाए अर्थात् जिसे इसकी आवश्यकता हो और जितनी आवश्यकता हो उसे ही और उतना ही दिया जाए। जो याचक है, आकांक्षी है उसे ही दिया जाए। दान का उचित बँटवारा न होने पर समीकरण गड़बड़ा जाते हैं। जिन्हें इसकी आवश्यकता नहीं है, वह इसका आदर नहीं करेगा फेंक देगा बेकार चला जाएगा या दुरुपयोग होगा क्योंकि उसके पास पहले से ही बहुत है या नहीं है और उसे इसकी आवश्यकता भी नहीं है जिसे आवश्यकता से अधिक दे दिया जाए वह भी इसका दुरुपयोग करेगा। धरती की सरकार का कोष हो या कुबेर का, इन्द्र का, वरुण देव का ...उचित प्रबन्धन का विवेक न होने के कारण रक्षा होते-होते हत्या हो जाती है। हत्या अधिकारों की, न्याय की, आकांक्षाओं की, सपनों की, उत्साह और आत्मबल की भी...। विवेकहीन संवेदनाएँ लाभ के स्थान पर हानि पहुँचा सकती हैं क्या ये ज्ञान है बादलों के पास? नहीं है। तभी तो उनका दान सृष्टि में मनुष्य, पशु-पक्षी, पेड़-पौधों की जान लेने का कारण भी बन जाता है। बादल ऐसे दानी हैं कि इनका दान अनुमान से परे है। दान कम भी हो सकता है अधिक भी। प्रबन्धन का कार्य भू-लोक के वासी अपने विवेक से करें, यह दायित्व इस दानी ने मनुष्यों पर ही छोड़ दिया है।

विवेकहीन बादलों के गुणों को नकारा तो नहीं जा सकता उसके सामने नतमस्तक ही हुआ जा सकता है। यहाँ मामला– 'तुम्हीं से मोहब्बत तुम्हीं से लड़ाई' वाला है। बादलों की विवेकहीनता जानते हुए भी कालिदास के 'मेघदूत' का अभिशप्त, निर्वासित, सजायाफ्ता यक्ष अपनी प्रिया के पास सन्देश भेजने के लिए इन्हें 'दूत' के रूप में चुनता है तो इस मेघदूत को वह इतना समझाता है कि लोकभाषा में कहा जाए तो कहेंगे कि दिमाग पका देता है। ऐसा करना, वैसा मत करना, ऐसे जाना, ऐसे मत जाना, इस समय जाना, इस समय मत जाना, ऐसे कहना, वैसे मत कहना आदि-आदि। यक्ष अपने मेघदूत की जिस तरह चिरौरी करता है, निवेदन करता है, चापलूसी करता है उससे उसके विरह की, प्रेम की पीड़ा का अनुमान लगाया जा सकता है विरहाग्नि ने उसे इतना विवेकान्ध बना दिया है कि वह यह नहीं समझ पाता है कि यह सन्देश पहुँचाने वाले मेघ वहाँ तक पहुँच पाएँगे या उसके पूर्व ही बरसकर मिट जाएँगे। इस रचना में कालिदास के उत्कृष्टतम रचनात्मक कौशल और कल्पनाशीलता के दर्शन होते हैं। यक्ष कहता है–

"जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्तकानां।
जानामि त्वां प्रकृतिपुरुषं कामरूपं मघोनः।।
तेनार्थित्वं त्वयि विधिवशादूर बन्धुर्गतोऽहं।
याण्चा मोघा वरमधि गुणे नाधमे लब्ध कामा।।"